करना पड़ता है। उनका कल्याण एवं सुविधा मेरी उच्चतम प्राथमिकता है। उनके एवं उनके परिजनों और आश्रितों के जीवन को सुविधापूर्ण बनाने के लिए मेरे स्तर से कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी जायेगी। मैं आप सबकी समस्याओं को सुनने के लिए सदा उपलब्ध रहूँगा और हर अधिकारी से भी मैं यही अपेक्षा रखूंगा।

किसी भी विभाग में बगैर टीम भावना के किसी भी प्रकार का सुधार संभव नहीं है। पुलिस विभाग भी इसका अपवाद नहीं हो सकता। आइये हम पुलिस मुख्यालय से लेकर थाना कार्यालय तक आपसी समन्वय और बेहतर नियोजन से न केवल पुलिस की कार्य संस्कृति को आमूलचूल बदल दें अपितु समाज के अन्तिम किनारे पर खड़े व्यक्ति को उसकी गरिमा और सम्मान की गारंटी दें।

मैं इस संदेश के माध्यम से आप सबका आह्वान करता हूँ कि हम इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सच्ची निष्ठा एवं मनोयोग से कार्य करें जिससे उत्तर प्रदेश पुलिस कामयाबियों की नई इबारत लिखने में सफल हो।

जयहिन्द।

30/4/17

(सुलखान सिंह)
पुलिस महानिदेशक,
उत्तर प्रदेश

मुख्यालय पुलिस महानिदेशक, उ0प्र0

समस्त अधीनस्थ पुलिस कर्मियों / साथियों के लिए सन्देश

सुलखान सिंह
आई.पी.एस.

पुलिस महानिदेशक,
उत्तर प्रदेश
1–तिलक मार्ग, लखनऊ–226001

दिनाँक : अप्रैल 30, 2017

सन्देश

समस्त अधीनस्थ पुलिस कर्मियों/साथियों के लिए

उत्तर प्रदेश पुलिस विश्व का विशालतम पुलिस संगठन है जिसका अत्यन्त गौरवमयी इतिहास रहा है। ऐसे गौरवशाली संगठन का हिस्सा होना हम सभी के लिए गर्व का विषय है। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस संगठन के नेतृत्व का सुअवसर प्राप्त हुआ है। मेरा पूरा प्रयास होगा कि मैं उ.प्र. पुलिस के इस गौरवमयी इतिहास में आप सबके सहयोग से यथाशक्ति योगदान करूं।

साथियों, वर्तमान में उत्तर प्रदेश पुलिस विभिन्न प्रकार की चुनौतियों से जूझ रही है। जहां एक ओर पुलिस को परम्परागत सामाजिक अपराधों से जूझना है वहीं दूसरी ओर साइबर अपराध, आपदा प्रबंधन, आतंकवाद जनित आन्तरिक सुरक्षा के मुद्दे हमारे लिए गंभीर चिन्ता का विषय बने हुये हैं। पुलिस को जहां मानवीय गरिमा को आहत करने वाले अपराध यथा ह्यूमन ट्रैफिकिंग और महिला–उत्पीड़न को अपनी प्राथमिकता के केन्द्र में लाना है वहीं दूसरी ओर नये–नये किस्म के अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए हमें अपनी व्यवसायगत दक्षता भी बढ़ानी होगी।

साथियों, चुनौतियाँ बहुत हैं और इन चुनौतियों से हमें हमेशा ही रूबरू होना पड़ेगा। मैं समझता हूँ कोई भी चुनौती इतनी बड़ी नहीं हो सकती जिसे हम अपने कर्म कौशल से न सुलझा सकें और इसके लिये हमें तत्काल कुछ सुधारात्मक प्रयास करने होंगे।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि नागरिकों के बीच पुलिस की विश्वसनीयता पर हमारी पूरी कार्यप्रणाली आधारित है। जब तक हमारे थानों की कार्यशैली में सुधार नहीं होगा तब तक हम आदर्श पुलिसिंग को यथार्थ के धरातल पर नहीं उतार सकते। हमें सबसे पहले थानों पर आम आदमी के साथ अपने व्यवहार में सुधार लाना होगा। विनम्रता और पीड़ितों के प्रति मनावोचित गरिमा प्रदर्शित किये बिना किसी भी प्रकार की सार्थक पुलिसिंग सम्भव नहीं है। थाने पर आने वाले हर जरूरतमंद के दुख–दर्द एवं पीड़ा को धैर्य एवं सहानुभूतिपूर्वक सुनना और पीड़ा के निवारणार्थ प्रयास करना हमारा प्रथम कर्तव्य है और यहीं से पुलिस की विश्वसनीयता की शुरूआत होती है। एक अच्छा इंसान होना किसी भी प्रकार की अच्छाई की बुनियाद है। शिकायती प्रार्थना–पत्रों की जाँच एवं अपराधों की विवेचना में निष्पक्षता हमारा मूलमंत्र होना चाहिये। अपराधों का पंजीकरण न करना समाज में हमारी अलोकप्रिय छवि निरूपित करता है और इससे जनता के प्रति हमारी विश्वसनीयता में गिरावट आती है। बिना प्राथमिकी दर्ज किए हम अपराधियों को किस प्रकार दंडित कर सकते हैं? अपराध का शत–प्रतिशत पंजीकरण अपराध निवारण का सबसे बड़ा सूत्र है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सब मेरी इस प्राथमिकता को समझेंगे।

नेतृत्व की पहली शर्त यह है कि हम अपने अधीनस्थों के सामने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें। जहां अधिकारी अपने आचरण से अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं उन जनपदों की कानून–व्यवस्था एवं अपराध नियंत्रण की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर दिखाई देती है। वहां के लोग पुलिस–प्रशासन में भरोसा रखते हैं और इस भरोसे के बूते हम कितनी ही बिगड़ती परिस्थितियों को संभाल लेते हैं। मेरा यह अनुभवजन्य विश्वास है कि यदि इलाके का थाना प्रभारी अपनी निष्पक्षता और न्यायप्रियता के लिए जाना जाता है तो उस इलाके में न केवल अपराध कम होते हैं अपितु पुलिस को जनता का सम्मान एवं सहयोग भी मिलता है।

पुलिस परिसरों खासकर थानों की सफाई एवं रख–रखाव उच्च कोटि का होना चाहिए। परिसर में कूड़ा–करकट, कन्डम सम्पत्ति, जब्तशुदा मोटर वाहन इत्यादि नहीं होने चाहिए।

पुलिस कर्मियों को विषम परिस्थितियों में अपने कर्तव्यों का निर्वहन